E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

ग्वालियर नगर के सिंधिया स्थापत्य का कला–ऐतिहासिक अध्ययनः शैली, संरचना एवं प्रभाव

रिचा राजपूत
पीएच. डी. शोधार्थी (इतिहास)
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म. प्र.)

डॉ. मीना श्रीवास्तव
शासकीय कमलाराजा कन्या स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय, ग्वालियर (म. प्र.)

Paper Received date
05/07/2026
Publishing Date
10/07/2026
DOI
https://doi.org/10.5281/zenodo.21675020

IMPACT FACTOR 5.924

शोध–सार

ग्वालियर नगर प्राचीन काल से ही भारतीय स्थापत्य, कला एवं सांस्कृतिक परंपराओं का एक महत्वपूर्ण केंद्र रहा है। यह नगर अपनी ऐतिहासिक धरोहरों, दुर्गों, मंदिरों तथा राजप्रासादों के कारण भारतीय कला इतिहास में विशिष्ट स्थान रखता है। 18वीं शताब्दी में मराठा शक्ति के उदय के पश्चात सिंधिया राजवंश ने ग्वालियर को अपनी राजनीतिक एवं सांस्कृतिक राजधानी के रूप में विकसित किया। सिंधिया शासकों ने न केवल प्रशासनिक दृष्टि से राज्य को सुदृढ़ किया, बल्कि स्थापत्य कला के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय योगदान दिया। उनके संरक्षण में अनेक महलों, मंदिरों, छतरियों, उद्यानों, सभागारों तथा सार्वजनिक भवनों का निर्माण कराया गया, जो आज भी ग्वालियर की सांस्कृतिक पहचान के प्रमुख प्रतीक हैं।

सिंधिया कालीन स्थापत्य की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता विभिन्न स्थापत्य शैलियों का समन्वित स्वरूप है। इन भवनों में भारतीय पारंपरिक स्थापत्य के साथ–साथ मुगल, राजपूत, मराठा एवं यूरोपीय वास्तुकला के तत्वों का अद्भुत मिश्रण दृष्टि गोचर होता है। मेहराब, गुंबद, झरोखे, विशाल प्रांगण, नक्काशीदार स्तंभ, भव्य दरबार हॉल तथा अलंकृत छतें इस स्थापत्य शैली की प्रमुख विशेषताएँ हैं। विशेष रूप से जयविलास पैलेस, मोतीमहल एवं सिंधिया छतरियाँ उस काल की कलात्मक उत्कृष्टता एवं राजसी वैभव का परिचय देती हैं।

सिंधिया स्थापत्य केवल राजसी शक्ति और वैभव का प्रतीक नहीं था, बल्कि यह तत्कालीन सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक जीवन का भी दर्पण था। इन भवनों के निर्माण में स्थानीय शिल्पकारों, भारतीय कारीगरों तथा यूरोपीय वास्तुकारों की संयुक्त भूमिका रही, जिसके कारण ग्वालियर की स्थापत्य परंपरा में एक विशिष्ट बहुसांस्कृतिक स्वरूप विकसित हुआ। प्रस्तुत शोध–पत्र में ग्वालियर नगर के प्रमुख सिंधिया स्थापत्य का कला–ऐतिहासिक अध्ययन करते हुए उनकी स्थापत्य शैली, संरचना, कलात्मक विशेषताओं तथा सांस्कृतिक प्रभावों का विस्तृत विश्लेषण किया गया है। साथ ही यह भी स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि सिंधिया स्थापत्य ने ग्वालियर की सांस्कृतिक विरासत एवं भारतीय कला इतिहास को किस प्रकार समृद्ध किया।

शब्द–बीज–सिंधिया स्थापत्य, ग्वालियर, कला–इतिहास, वास्तुकला, जयविलास पैलेस, छत्री स्थापत्य।

प्रस्तावना

भारत की स्थापत्य परंपरा प्राचीन काल से ही विविध सांस्कृतिक प्रभावों, धार्मिक मान्यताओं तथा ऐतिहासिक परिस्थितियों से प्रभावित रही है। देश के विभिन्न क्षेत्रों में विकसित स्थापत्य शैलियाँ वहाँ की राजनीतिक सत्ता, सामाजिक संरचना तथा सांस्कृतिक आदान–प्रदान को अभिव्यक्त करती हैं। मध्य भारत का ग्वालियर नगर इसी समृद्ध स्थापत्य परंपरा का एक महत्वपूर्ण केंद्र रहा है। ग्वालियर अपनी ऐतिहासिक धरोहरों, दुर्गों, मंदिरों, राजमहलों तथा स्मारकों के कारण भारतीय कला एवं वास्तुकला के इतिहास में विशिष्ट स्थान रखता है।

18वीं शताब्दी में मराठा शक्ति के उदय के साथ सिंधिया राजवंश ने ग्वालियर को अपनी राजनीतिक एवं सांस्कृतिक राजधानी के रूप में विकसित किया। सिंधिया शासकों ने राज्य की प्रशासनिक व्यवस्था को सुदृढ़ करने के साथ–साथ स्थापत्य कला के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनके संरक्षण में अनेक राजमहलों, प्रशासनिक भवनों, मंदिरों,

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

छतरियों, उद्यानों तथा सार्वजनिक संरचनाओं का निर्माण कराया गया। इन भवनों में भारतीय स्थापत्य परंपराओं के साथ–साथ मुगल, राजपूत, मराठा तथा यूरोपीय वास्तुकला के तत्वों का अद्भुत समन्वय दृष्टि गोचर होता है।[1]

सिंधिया स्थापत्य की प्रमुख विशेषता इसकी बहुआयामी शैली है। भवनों में विशाल प्रांगण, अलंकृत स्तंभ, झरोखे, मेहराब, गुंबद, नक्काशीदार द्वार तथा भव्य सभा–कक्षों का प्रयोग किया गया। विशेष रूप से जयविलास पैलेस यूरोपीय स्थापत्य शैली का उत्कृष्ट उदाहरण है, जिसमें इटालियन एवं कोरिंथियन शैली के प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। वहीं मोतीमहल, कम्पू कोठी, तथा सिंधिया छतरियों में भारतीय एवं राजपूत स्थापत्य तत्वों का प्रभाव अधिक दिखाई देता है। सिंधिया स्थापत्य केवल राजसी वैभव और शक्ति प्रदर्शन का माध्यम नहीं था, बल्कि यह तत्कालीन सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों का भी प्रतिबिंब था। इन भवनों के निर्माण में स्थानीय शिल्पकारों तथा विदेशी वास्तुकारों की संयुक्त भूमिका रही, जिससे ग्वालियर की स्थापत्य परंपरा में सांस्कृतिक समन्वय का एक विशिष्ट स्वरूप विकसित हुआ। वर्तमान समय में ये स्थापत्य धरोहरें न केवल ऐतिहासिक महत्व रखती हैं, बल्कि पर्यटन, कला–अध्ययन तथा सांस्कृतिक अनुसंधान के प्रमुख केंद्र भी हैं। इस प्रकार सिंधिया स्थापत्य ग्वालियर की सांस्कृतिक पहचान एवं भारतीय कला इतिहास की अमूल्य धरोहर के रूप में आज भी महत्वपूर्ण स्थान रखता है।[2]

शोध के उद्देश्य

1. ग्वालियर नगर के प्रमुख सिंधिया स्थापत्य का कला–ऐतिहासिक अध्ययन करना।
2. सिंधिया स्थापत्य में प्रयुक्त स्थापत्य शैलियों का विश्लेषण करना।
3. स्थापत्य संरचना एवं कलात्मक विशेषताओं का अध्ययन करना।
4. सिंधिया स्थापत्य पर भारतीय एवं पाश्चात्य प्रभावों का मूल्यांकन करना।
5. ग्वालियर की सांस्कृतिक पहचान में सिंधिया स्थापत्य की भूमिका को स्पष्ट करना।

शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है। अध्ययन हेतु प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक स्रोतों में स्वयं के द्वारा किया गया सर्वेक्षण और पुजारियों आदि से एकत्र किए गए आंकड़े शामिल हैं। पुस्तकों, शोध–पत्रों, अभिलेखों, पुरातात्विक विवरणों एवं स्थानीय स्रोतों से प्राप्त सामग्री का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

सिंधिया राजवंश एवं ग्वालियर

सिंधिया राजवंश मराठा साम्राज्य का एक महत्वपूर्ण एवं प्रभावशाली अंग था, जिसने मध्य भारत के राजनीतिक, सांस्कृतिक तथा स्थापत्य इतिहास में विशेष योगदान दिया। 18वीं शताब्दी में मराठा शक्ति के विस्तार के साथ सिंधिया वंश का उदय हुआ और महादजी सिंधिया ने अपनी सैन्य एवं राजनीतिक कुशलता के बल पर ग्वालियर राज्य को सुदृढ़ आधार प्रदान किया। उन्होंने न केवल उत्तर भारत में मराठा प्रभाव को पुनर्स्थापित किया, बल्कि ग्वालियर को एक महत्वपूर्ण राजनीतिक केंद्र के रूप में विकसित किया।[3]

महादजी सिंधिया के पश्चात आने वाले शासकों ने राज्य के सांस्कृतिक एवं स्थापत्य विकास को नई दिशा प्रदान की। विशेष रूप से महाराजा जयाजीराव सिंधिया, माधवराव सिंधिया तथा जीवाजीराव सिंधिया के शासनकाल में स्थापत्य कला का उल्लेखनीय विकास हुआ। इस काल में अनेक राजमहलों, प्रशासनिक भवनों, उद्यानों, मंदिरों तथा स्मारकों का निर्माण कराया गया। जयविलास पैलेस, मोतीमहल, कम्पू कोठी एवं विभिन्न छतरियाँ इसी स्थापत्य परंपरा के उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

सिंधिया शासकों ने भारतीय स्थापत्य परंपराओं के साथ यूरोपीय वास्तुकला को भी अपनाया, जिसके कारण ग्वालियर की स्थापत्य शैली में एक विशिष्ट मिश्रित स्वरूप विकसित हुआ। उनके संरक्षण में कला, संगीत, साहित्य एवं शिल्पकला को भी प्रोत्साहन मिला, जिससे ग्वालियर एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक केंद्र के रूप में स्थापित हुआ। इस प्रकार सिंधिया राजवंश ने ग्वालियर की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक पहचान को समृद्ध बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।[4]

सिंधिया स्थापत्य की प्रमुख विशेषताएँ

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

सिंधिया स्थापत्य में भारतीय, मुगल, राजपूत एवं यूरोपीय शैलियों का समन्वय, भव्यता, अलंकरण, विशाल प्रांगण एवं सांस्कृतिक विविधता दिखाई देती है।

सिंधिया स्थापत्य की कुछ विशेषताएं निम्न हैं–

1. **मिश्रित स्थापत्य शैली**–सिंधिया स्थापत्य की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता इसकी मिश्रित स्थापत्य शैली है, जिसमें हिन्दू, मुगल, राजपूत एवं यूरोपीय वास्तुकला के तत्वों का सुंदर समन्वय दिखाई देता है। भवनों में मेहराब, गुंबद, झरोखे, विशाल प्रांगण, अलंकृत स्तंभ तथा नक्काशीदार द्वारों का प्रयोग प्रमुखता से किया गया। यह शैली ग्वालियर की सांस्कृतिक विविधता एवं स्थापत्य समृद्धि को प्रदर्शित करती है। सिंधिया शासकों ने पारंपरिक भारतीय कला को विदेशी प्रभावों के साथ संयोजित कर एक विशिष्ट स्थापत्य स्वरूप विकसित किया।[5]

2. **यूरोपीय प्रभाव**–19वीं शताब्दी में ब्रिटिश संपर्क एवं पश्चिमी संस्कृति के प्रभाव के कारण सिंधिया स्थापत्य में यूरोपीय वास्तुकला के तत्वों का समावेश बढ़ गया। विशेष रूप से जयविलास पैलेस इसका उत्कृष्ट उदाहरण है, जिसमें इटालियन, टस्कन एवं कोरिंथियन शैली के विशाल स्तंभों और भव्य दरबार हॉल का निर्माण किया गया। भवनों की सममिति, विशाल खिड़कियाँ तथा आंतरिक सजावट यूरोपीय प्रभाव को स्पष्ट रूप से दर्शाती हैं। इससे सिंधिया स्थापत्य में आधुनिकता एवं राजसी वैभव का समन्वित स्वरूप विकसित हुआ।[6]

3. **अलंकरण एवं सज्जा**– सिंधिया कालीन भवनों में अलंकरण एवं सज्जा पर विशेष ध्यान दिया गया। भवनों की दीवारों, छतों एवं स्तंभों पर उत्कृष्ट नक्काशी, चित्रांकन तथा कलात्मक डिज़ाइन बनाए गए। संगमरमर, काँच, झूमर, सोने की परत तथा रंगीन सजावटी वस्तुओं का उपयोग स्थापत्य को भव्यता प्रदान करता है। विशेष रूप से राजमहलों के सभा–कक्षों एवं दरबार हॉल में अत्यधिक कलात्मक सौंदर्य दिखाई देता है। यह सजावट केवल सौंदर्य के लिए नहीं थी, बल्कि राजसी शक्ति एवं समृद्धि का भी प्रतीक थी।

4. **धार्मिक एवं सांस्कृतिक तत्व**– सिंधिया स्थापत्य में धार्मिक एवं सांस्कृतिक तत्वों का विशेष महत्व रहा है। मंदिरों, छतरियों एवं स्मारकों में हिन्दू धार्मिक प्रतीकों, देवी–देवताओं की मूर्तियों तथा पारंपरिक शिल्पकला का प्रयोग किया गया। इन भवनों में भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों एवं धार्मिक आस्थाओं का संरक्षण स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। सिंधिया शासकों ने धार्मिक स्थलों के निर्माण एवं संरक्षण के माध्यम से भारतीय परंपराओं को प्रोत्साहित किया। इससे ग्वालियर की सांस्कृतिक पहचान मजबूत हुई तथा स्थापत्य कला में आध्यात्मिकता एवं सांस्कृतिक समन्वय का विकास हुआ।[7]

प्रमुख सिंधिया स्थापत्य का अध्ययन

जयविलास पैलेस, मोतीमहल, कम्पू कोठी एवं सिंधिया छतरियाँ सिंधिया स्थापत्य की कला, वैभव एवं सांस्कृतिक समन्वय दर्शाती हैं।

सिंधिया स्थापत्य का अध्ययन निम्न बिन्दुओं में कर सकते हैं–

1. **जयविलास पैलेस**– जयाजीराव सिंधिया द्वारा निर्मित जयविलास पैलेस ग्वालियर का सबसे प्रसिद्ध एवं भव्य राजमहल माना जाता है। इसका निर्माण 19वीं शताब्दी में यूरोपीय वास्तुकार माइकल फिलोज द्वारा कराया गया था। इस महल में इटालियन, टस्कन एवं कोरिंथियन स्थापत्य शैली का सुंदर समन्वय दिखाई देता है। विशाल दरबार हॉल, आकर्षक झूमर, अलंकृत छतें, संगमरमर की सजावट तथा कलात्मक स्तंभ इसकी प्रमुख विशेषताएँ हैं। यह महल सिंधिया राजवंश के वैभव, कला–प्रेम एवं यूरोपीय प्रभाव का उत्कृष्ट उदाहरण है। वर्तमान में इसका एक भाग संग्रहालय के रूप में भी उपयोग किया जाता है।[8]

2. **मोतीमहल**–मोतीमहल सिंधिया शासनकाल का एक महत्वपूर्ण प्रशासनिक एवं सांस्कृतिक भवन था। इसका निर्माण राजकीय कार्यों एवं दरबारी गतिविधियों के लिए कराया गया था। भवन में भारतीय एवं मुगल स्थापत्य शैली का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देताहै। विशाल सभा–कक्ष, सुंदर मेहराब, अलंकृत दीवारें तथा कलात्मक सजावट इसकी विशेषताएँ हैं। मोतीमहल की स्थापत्य योजना में उपयोगिता एवं सौंदर्य दोनों का संतुलन दिखाई देता है। यह भवन सिंधिया शासकों की प्रशासनिक दक्षता तथा कला के प्रति उनके संरक्षण भाव को प्रदर्शित करता है।

3. **सिंधिया छतरियाँ**– ग्वालियर की सिंधिया छतरियाँ स्मारकीय स्थापत्य कला का उत्कृष्ट उदाहरण मानी जाती हैं। इनका निर्माण सिंधिया शासकों की स्मृति में कराया गया था। छतरियों में संगमरमर एवं बलुआ पत्थर का प्रयोग किया गया है, जिससे उनकी भव्यता और आकर्षण बढ़ जाता है। इनमें राजपूत एवं मराठा स्थापत्य शैली का समन्वय स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। सुंदर गुंबद, नक्काशीदार स्तंभ, झरोखे तथा कलात्मक छतें इनकी प्रमुख विशेषताएँ हैं। ये छतरियाँ न केवल स्थापत्य दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं, बल्कि ग्वालियर की सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक विरासत का भी महत्वपूर्ण अंग हैं।[9]

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

4. **धार्मिक स्थापत्य–** सिंधिया शासकों ने धार्मिक स्थापत्य के विकास एवं संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने अनेक मंदिरों, धर्मस्थलों एवं पूजास्थलों का निर्माण कराया तथा पुराने मंदिरों का संरक्षण भी किया। इन मंदिरों में नागर शैली, स्थानीय स्थापत्य परंपराओं एवं पारंपरिक हिन्दू शिल्पकला का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। मंदिरों में शिखर, मंडप, नक्काशीदार स्तंभ एवं देवी–देवताओं की कलात्मक मूर्तियाँ विशेष आकर्षण का केंद्र हैं। धार्मिक स्थापत्य के माध्यम से सिंधिया शासकों ने भारतीय संस्कृति, धार्मिक आस्था एवं सामाजिक मूल्यों को संरक्षित एवं प्रोत्साहित किया।

स्थापत्य संरचना का विश्लेषण

सिंधिया स्थापत्य में सममिति, विशालता एवं कलात्मक संतुलन विशेष रूप से दृष्टि गोचर होता है। भवनों की संरचना में निम्न तत्व प्रमुख हैं–

1. **विशाल प्रांगण–**सिंधिया स्थापत्य में विशाल प्रांगणों का निर्माण सामाजिक, प्रशासनिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों को ध्यान में रखकर किया जाता था। ये प्रांगण भवनों को खुलापन, संतुलन एवं भव्यता प्रदान करते थे। राजदरबार, सार्वजनिक समारोह तथा धार्मिक आयोजनों के लिए इनका विशेष उपयोग किया जाता था।
2. **बहुमंजिला संरचना–** सिंधिया कालीन भवनों में बहुमंजिला संरचनाओं का निर्माण राजसी वैभव एवं प्रशासनिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर किया गया। इन संरचनाओं से भवनों की विशालता एवं आकर्षण में वृद्धि होती थी। ऊपरी मंजिलों का उपयोग आवासीय, प्रशासनिक तथा सुरक्षा संबंधी उद्देश्यों के लिए किया जाता था।[10]
3. **स्तंभयुक्त बरामदे–** स्तंभयुक्त बरामदे सिंधिया स्थापत्य की एक महत्वपूर्ण विशेषताथे। ये बरामदे भवनों की सुंदरता बढ़ाने के साथ–साथ वायु एवं प्रकाश के उचित संचार में सहायक होते थे। स्तंभों पर की गई नक्काशी तथा कलात्मक डिज़ाइन स्थापत्य की उत्कृष्ट शिल्पकला को प्रदर्शित करते हैं।
4. **नक्काशीदार द्वार एवं झरोखे–** नक्काशीदार द्वार एवं झरोखे सिंधिया स्थापत्य की कलात्मक समृद्धि के प्रतीक हैं। इन परपारंपरिक भारतीय शिल्पकला, पुष्प आकृतियाँ तथा ज्यामितीय डिज़ाइन उकेरे जाते थे। झरोखे न केवल सजावट के लिए उपयोगी थे, बल्कि भवनों में प्रकाश एवं वायु के प्रवेश का माध्यम भी थे।[11]
5. **मेहराब एवं गुंबद**– मेहराब एवं गुंबद सिंधिया स्थापत्य में मुगल एवं इस्लामी वास्तुकला के प्रभाव को स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं। ये भवनों को मजबूती, भव्यता एवं कलात्मक आकर्षण प्रदान करते थे। गुंबदों की ऊँचाई और मेहराबों की सजावट राजसी गरिमा एवं स्थापत्य संतुलन का परिचायक थी।
6. **उद्यान योजना एवं जल संरचनाएँ–** सिंधिया स्थापत्य में उद्यान योजना एवं जल संरचनाओं का विशेष महत्व था। महलों एवं भवनों के आसपास सुंदर बाग–बगीचे, फव्वारे, तालाब तथा जलाशय बनाए जाते थे। ये संरचनाएँ भवनों के सौंदर्य को बढ़ाने के साथ–साथ शीतल एवं प्राकृतिक वातावरण प्रदान करती थीं। इन विशेषताओं से स्पष्ट होता है कि सिंधिया स्थापत्य केवल उपयोगिता तक सीमित नहीं था, बल्कि उसमें सौंदर्य एवं शक्ति प्रदर्शन का उद्देश्य भी निहित था।[12]

सिंधिया स्थापत्य पर विभिन्न शैलियों का प्रभाव

सिंधिया स्थापत्य पर मराठा, मुगल, राजपूत एवं यूरोपीय शैलियों का प्रभाव दिखाई देता है, जिससे मिश्रित वास्तुकला विकसित हुई। कुछ शैलियाँ और उनके प्रभाव निम्न हैं–

मराठा शैली

सिंधिया स्थापत्य में मराठा शैली का विशेष प्रभाव दिखाई देता है, क्योंकि सिंधिया राजवंश मूलतः मराठा साम्राज्य का महत्वपूर्ण अंग था। मराठा स्थापत्य की प्रमुख विशेषता इसकी सादगी, उपयोगिता एवं संरचनात्मक मजबूती थी। भवनों में विशाल प्रांगण, खुले आंगन, ऊँची दीवारें तथा प्रशासनिक उपयोग के अनुरूप संरचनाएँ निर्मित की जाती थीं। मराठा शैली में धार्मिक एवं सांस्कृतिक तत्वों को भी महत्वपूर्ण स्थान दिया गया, जिसके कारण मंदिरों एवं राजप्रासादों में पारंपरिक भारतीय स्थापत्य का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। सिंधिया शासकों द्वारा निर्मित कई भवनों में मराठा स्थापत्य की व्यावहारिकता एवं संतुलित संरचना दृष्टि गोचर होती है। इस शैली ने ग्वालियर की स्थापत्य परंपरा को स्थानीयता एवं सांस्कृतिक पहचान प्रदान की। मराठा शैली की सादगी और शक्ति का समन्वय सिंधिया स्थापत्य की एक प्रमुख विशेषता बन गया।[13]

मुगल शैली

सिंधिया स्थापत्य पर मुगल शैली का गहरा प्रभाव दिखाई देता है। मुगल स्थापत्य अपनी भव्यता, सममिति एवं कलात्मक सजावट के लिए प्रसिद्ध था। सिंधिया कालीन भवनों में मेहराब, गुंबद, विशाल द्वार, संगमरमर की सजावट तथा उद्यान

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

योजना का प्रयोग मुगल शैली के प्रभाव को दर्शाता है। भवनों में संतुलित संरचना एवं सुंदर अलंकरण मुगल कला की प्रमुख विशेषताएँ थीं। मोतीमहल एवं अन्य प्रशासनिक भवनों में मुगल शैली की छाप स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। उद्यानों एवं जल संरचनाओं का निर्माण भी मुगल स्थापत्य परंपरा से प्रभावित था। सिंधिया शासकों ने मुगल शैली के तत्वों को स्थानीय स्थापत्य के साथ समन्वित कर एक विशिष्ट वास्तुकला विकसित की। इससे ग्वालियर के भवनों में सौंदर्य, भव्यता एवं कलात्मक आकर्षण का विकास हुआ।[14]

राजपूत शैली

राजपूत शैली का प्रभाव सिंधिया स्थापत्य में विशेष रूप से छतरियों, महलों एवं धार्मिक भवनों में दिखाई देताहै। राजपूत स्थापत्य अपनी वीरता, सांस्कृतिक गौरव एवं कलात्मकता के लिए प्रसिद्ध है। सिंधिया स्थापत्य में झरोखे, छतरियाँ, नक्काशीदार स्तंभ, जालियाँ तथा ऊँचे प्रवेश द्वार राजपूत शैली की प्रमुख विशेषताओं को प्रदर्शित करते हैं। इन भवनों में पत्थर की उत्कृष्ट नक्काशी एवं सजावटी डिज़ाइन विशेष आकर्षण का केंद्र हैं। सिंधिया छतरियाँ राजपूत स्थापत्य प्रभाव का उत्कृष्ट उदाहरण मानी जाती हैं।राजपूत शैली ने सिंधिया स्थापत्य को सौंदर्य, शौर्य एवं सांस्कृतिक गरिमा प्रदान की। इस शैली के कारण ग्वालियर के भवनों में पारंपरिक भारतीय कला एवं स्थापत्य की समृद्ध परंपरा का संरक्षण हुआ।[15]

यूरोपीय शैली

19वीं शताब्दी में ब्रिटिश संपर्क के बढ़ने के साथ सिंधिया स्थापत्य पर यूरोपीय शैली का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगा। यूरोपीय स्थापत्य में सममिति, विशालता, स्तंभयुक्त संरचना तथा भव्य आंतरिक सजावट को विशेष महत्व दिया जाता था। जयविलास पैलेस इसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है, जिसमें इटालियन, टस्कन एवं कोरिंथियन शैली के प्रभाव स्पष्ट दिखाई देते हैं। विशाल दरबार हॉल, आकर्षक झूमर, संगमरमर की सजावट एवं कलात्मक छतें यूरोपीय स्थापत्य की विशेषताओं को प्रदर्शित करती हैं। सिंधिया शासकों ने यूरोपीय वास्तुकारों की सहायता से आधुनिक एवं भव्य भवनों का निर्माण कराया। इस शैली ने ग्वालियर की स्थापत्य परंपरा में नवीनता एवं आधुनिकता का समावेश किया। यूरोपीय प्रभाव के कारण सिंधिया स्थापत्य में भारतीय एवं पाश्चात्य कला का अद्भुत समन्वय विकसित हुआ।[16]

संक्षेप में–

स्थापत्य शैली	प्रमुख प्रभाव
मराठा शैली	सरलता, प्रांगण योजना
मुगल शैली	मेहराब, गुंबद, उद्यान
राजपूत शैली	झरोखे, छतरियाँ
यूरोपीय शैली	स्तंभ, विशाल हॉल, सजावट

सांस्कृतिक एवं सामाजिक प्रभाव

सिंधिया स्थापत्य ने ग्वालियर की सांस्कृतिक पहचान को सुदृढ़ एवं विशिष्ट बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सिंधिया शासकों द्वारा निर्मित महल, छतरियाँ, मंदिर, उद्यान तथा प्रशासनिक भवन केवल स्थापत्य कला के उदाहरण नहीं हैं, बल्कि वे ग्वालियर की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत के प्रतीक भी हैं। इन भवनों ने तत्कालीन समाज में कला, संगीत, साहित्य तथा सांस्कृतिक गतिविधियों को संरक्षण एवं प्रोत्साहन प्रदान किया। विशेष रूप से राजदरबारों एवं महलों में संगीत सभाओं, साहित्यिक चर्चाओं तथा सांस्कृतिक आयोजनों का आयोजन किया जाता था, जिससे ग्वालियर एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक केंद्र के रूप में विकसित हुआ।[17]

जयविलास पैलेस, मोतीमहल तथा सिंधिया छतरियों जैसे स्थापत्य आज भी उस काल की कलात्मक उत्कृष्टता एवं राजसी वैभव का परिचय देते हैं। इन भवनों की स्थापत्य शैली में भारतीय, मुगल, राजपूत एवं यूरोपीय कला का समन्वय दिखाई देता है, जिसने ग्वालियर की सांस्कृतिक विविधता को और अधिक समृद्ध किया।

वर्तमान समय में सिंधिया स्थापत्य धरोहरें पर्यटन, सांस्कृतिक अध्ययन एवं ऐतिहासिक शोध का महत्वपूर्ण केंद्र बन चुकी हैं। देश–विदेश से आने वाले पर्यटक इन ऐतिहासिक स्थलों का अवलोकन कर ग्वालियर की समृद्ध कला एवं संस्कृति से परिचित होते हैं। साथ ही शोधकर्ताओं एवं इतिहासकारों के लिए ये भवन स्थापत्य कला, सांस्कृतिक इतिहास तथा

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

सामाजिक विकास के अध्ययन का महत्वपूर्ण स्रोत हैं। इस प्रकार सिंधिया स्थापत्य ग्वालियर की सांस्कृतिक विरासत को आज भी जीवंत बनाए हुए है।[18]

निष्कर्ष

ग्वालियर नगर का सिंधिया स्थापत्य भारतीय स्थापत्य परंपरा, सांस्कृतिक समन्वय एवं कलात्मक वैभव का उत्कृष्ट उदाहरण है। सिंधिया शासकों ने अपने शासनकाल में महलों, मंदिरों, छतरियों, उद्यानों तथा प्रशासनिक भवनों का निर्माण कर ग्वालियर को स्थापत्य एवं सांस्कृतिक दृष्टि से समृद्ध बनाया। इन भवनों में भारतीय, मुगल, राजपूत, मराठा तथा यूरोपीय स्थापत्य शैलियों का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है, जो उस काल की सांस्कृतिक विविधता एवं कलात्मक दृष्टिकोण को स्पष्ट करता है। सिंधिया शासकों ने स्थापत्य कला को केवल राजसी वैभव एवं शक्ति प्रदर्शन तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे सांस्कृतिक संरक्षण, धार्मिक आस्था तथा सामाजिक विकास का माध्यम भी बनाया। जयविलास पैलेस, मोतीमहल, कम्पू कोठी तथा विभिन्न सिंधिया छतरियाँ आज भी उस युग की स्थापत्य उत्कृष्टता एवं कलात्मक समृद्धि का परिचय देती हैं। इन स्थापत्य धरोहरों ने ग्वालियर की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक पहचान को राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित किया है। वर्तमान समय में ये स्मारक पर्यटन, कला–अध्ययन एवं ऐतिहासिक अनुसंधान के महत्वपूर्ण केंद्र बन चुके हैं। अतः सिंधिया स्थापत्य का संरक्षण, संवर्धन एवं गहन अध्ययन भारतीय कला इतिहास, सांस्कृतिक विरासत तथा स्थापत्य परंपराओं की दृष्टि से अत्यंत आवश्यक एवं महत्वपूर्ण है।

संदर्भग्रंथसूची

[1] तिवारी, डॉ. ऋचा (2023) रू सिंधिया स्थापत्य, बी. एफ. सी. पब्लिकेशन प्रा. लि., लखनऊ, पृ. 80–81।

[2] द्विवेदी, हरिहर निवास (1980): ग्वालियर दर्शन, साधना प्रेस, ग्वालियर, पृ. 274–277।

[3] काटकर, रतन : ग्वालियर का इतिहास, पृष्ठ – 40।

[4] शर्मा, डॉ. रामावतार (2018): भारतीय स्थापत्य कला, साहित्य भवन प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 112–130।

[5] चतुर्वेदी, डॉ. ममता (2021): ग्वालियर की सांस्कृतिक धरोहर, साहित्य संगम प्रकाशन, भोपाल, पृ. 85–102।

[6] पवार, डॉ. आर. एस., डॉ. पवार राजीव (2019): ग्वालियर जिला की सांस्कृतिक पारिस्थितिकी एक भौगोलिक विश्लेषण, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृ.– 311–312।

[7] सर्वेक्षण के दौरान प्राप्त जानकारी के अनुसार।

[8] कृष्णन, व० सु० (1968): ग्वालियर जिला गजेटियर, पृ–48।

[9] सर्वेक्षण के दौरान पुजारी श्री अशोक पुरंदरे से प्राप्त जानकारी के अनुसार।

[10] ग्वालियर राज्य गजेटियर (1912): सेंट्रल इंडिया गजेटियर, वॉल्यूम–प्ट, कलकत्ता, भारत सरकार प्रकाशन, पृ. सं. 155–168।

[11] मित्तल, एस. (2022): भारतीय विरासत और राजनीतिक चेतना, दिल्ली, भारतीय ऐतिहासिक प्रकाशन।

[12] शर्मा, पी. (2010): सिंधिया घराने का सामाजिक और राजनीतिक योगदान, भोपाल, लोकभारती प्रकाशन, पृ. सं. 101–118।

[13] Brown, Percy (1942): Indian Architecture (Islamic Period), D.B. Taraporevala Sons & Co., Bombay, pp. 145-168.

[14] Havell, E.B. (1913): Indian Architecture and Its History, John Murray Publication, London, pp. 210-228.

[15] Kumar Vinod (2024): The Impact of Rajput Architecture style on Contemporary Resort Design in Jaipur Rajasthan ShodhKosh Journal pp-367-375।

[16] ग्वालियर राज्य गजेटियर (1912): सेंट्रल इंडिया गजेटियर, वॉल्यूम–प्ट, कलकत्ता, भारत सरकार प्रकाशन, पृ. सं. 155–168।

[17] Archaeological Survey of India (ASI) (1995): Reports Related to Gwalior State Architecture, Government of India Publication, New Delhi, pp. 67-89.

[18] द्विवेदी, हरिहर निवास (1980): ग्वालियर दर्शन, साधना प्रेस, ग्वालियर, पृ. 274–277।